



26343 - क्यो मोजे उतारने से वुजू टूट जाता है ?

प्रश्न

जब आदमी वुजू करे और दोनों मोजों पर मसह करे औ मसह की अवधि के दौरान नमाज़ से पूर्व अपने मोजों को निकाल दे, तो क्या वह नमाज़ पढ़ सकता है और उसकी नमाज़ शुद्ध होगी या मोजे निकाल देने से उसका वुजू टूट जायेगा ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए ही योग्य है और अल्लाह के पैगंबर पर दया और शांति अवतरित हो। इसके बाद :

यदि मनुष्य ने मोजे या जुराब को उस पर मसह करने के बाद निकाल दिया तो विद्वानों के शुद्ध कथन के अनुसार उसकी पवित्रता (वुजू) व्यर्थ नहीं होगी, इसलिए कि जब आदमी ने मोजे पर मसह किया तो शरई प्रमाण के आशय के आधार पर उसकी पवित्रता संपूर्ण हो गई, फिर जब उसने उसे (मोजे को) निकाल दिया तो शरई प्रमाण के आधार पर प्रमाणित यह पवित्रता किसी दूसरे शरई प्रमाण ही से टूट सकती है, और यहाँ इस बात पर कोई ऐसा प्रमाण नहीं है कि मसह किए गये मोजे या जुराब को उतार देने से वुजू टूट जाता है। इस आधार पर उसका वुजू बाक़ी रहेगा, और इसी बात को शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह और विद्वानों के एक समूह ने अपनाया है। लेकिन यदि वह इसके बाद मोजे को दुबारा पहन ले और उसका वुजू टूट जाये फिर भविष्य में उस पर मसह करना चाहे तो उसके लिए ऐसा करना जाइज़ नहीं है, क्योंकि क्योंकि मोजे को ऐसी पवित्रता के बाद पहनना अनिवार्य है जिसमें उसने पैर धुला हो, विद्वानों की बातों की रोशनी में मुझे इसी का ज्ञान है। और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखता है।

देखिये : मजमूओ फतावा व रसाइल अशशैख / मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह (11/179) तथा मजमूउल फतावा लि-शैख़िल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह (21/ 179, 215)